8

सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी का बढ़ता वर्चस्व

सुनील कुमारी
शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर (राजस्थान)।

किसी भाषा का वास्तविक स्थान इस बात से निश्चित होता है कि जनता में कितने स्तरों और रूपों में प्रयोग होता है। भाषा का प्रयोग राजकाज या शासन तन्त्र के अतिरिक्त शिक्षा संस्थानों, व्यापार, उद्योगों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पारस्परिक संबंधों तथा दैनिक व्यवहार में भी किया जाता है। कार्य तथा परिस्थितिनुसार हमारी भाषा विविध रूप ग्रहण कर लेती है। राजनीतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ दैनिक व्यवहार में हिन्दी की विशेष उपयोगिता है।

आज के सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी के स्थान और सम्मान के प्रश्न को लिया जाए तो हिन्दी का सम्यक् स्थान इस बात पर निर्भर है कि वह पूरी तरह और सच्चें अर्थो में भारत गणराज्य की भाषा बन पाई या नहीं ? क्योंकि संविधान के अनुसार तो संविधान लागू होने के पन्द्रह वर्ष बाद यानि 1965 में ही हिन्दी को पूर्णतः भारत की राजभाषा बन जाना चाहिए था और उकसे विकास के लिए ईमानदार कोशिश भी होनी चाहिए थी परन्तु भारत की स्वार्थपूर्ण राजनीति एवम् ढुलमुल सरकारी नितियों के कारण ऐसा नही हो पाया। परन्तु हिन्दी का स्थान भारत एवम् विश्व में केवल इस बात से निर्धारित नहीं होता कि वह राजभाषा बन पाई या नहीं क्योंकि कोई भी भाषा अपने सामर्थ्य एवम् लोकप्रियता से आगे बढ़ती है। आज हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली दूसरी भाषा है। यह भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ दो भिन्न भाषा–भाषियों में सम्पर्क की भाषा भी है। मनोरंजन की माध्यम भाषा भी है।

मातृभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करने वाले भारतीयों की संख्या लगभग साढ़े तैंतीस करोड़ है। भारत की 60 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है तथा 20 प्रतिशत जनसंख्या कस्बों में। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार आदि हिन्दी भाषी प्रदेश है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी आज सम्पूर्ण भारत में समझी जाने लगी है।

यह कहना अनुचित नही होगा कि हिन्दी भारत की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक विशाल क्षेत्र की भाषा है। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी के अध्ययन एवम् अध्यापन का कार्य हो रहा है। यह कार्य स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक किया जा रहा है। इन देशों में प्रमुख हैं – मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सिंगापुर, ट्रिनिडाड और टोबेगो, सूरीनाम, नेपाल, बर्मा, थाईलैंड, पाकिस्तान, अमेरिका, कनाड़ा, रूस, नीदरलैंड, स्वीडन, डेनमार्क आदि। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित हो रही है। विदेश में हिन्दी

की प्रथम ऑनलाईन पत्रिका 'भारत–दर्शन' है जिसे न्यूजीलैंड से चलाया गया था। इसके अतिरिक्त ईंग्लैंड से 'पुरवाई' अमेरिका से 'सौरभ', विश्व–विवेक, जापान से 'जापान भारती', सर्वोदय और ज्वालामुखी', चीन से 'सचित्रचीन' आदि। अमेरिका से 'वॉयस ऑफ अमेरिका', जर्मनी से 'रेडियो कोलोन' आदि कई देशों में रेडियों और टेलीविजन कार्यक्रमों में हिन्दी को विशेष स्थान प्राप्त है।

विदेशों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार का श्रेय वहाँ रह रहे भारतीयों को जाता है क्योंकि विश्व के लगभग 130–135 से अधिक देशों में भारतीय मूल के लोग रह रहे हैं। इन भारतीय मूल के लोगों को हिन्दी पैतृक सम्पति के रूप में मिली है।

हिन्दी साहित्य का अनुवाद विदेशी भाषाओं में किया जा रहा है। इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में जिस प्रकार पूरे विश्व के लोग एक–दूसरे से मिले बिना एक–दूसरे को पहचानने लगे है; ठीक उसी प्रकार प्रौद्योगिकी के प्रयोग से हिन्दी ग्रन्थों का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। तुलसीदास का रामचरित मानस, प्रेमचन्द का निर्मला, गोदान, टैगोर का गीताजंलि, फणीश्वर नाथ 'रेणु' का 'मैला आँचल', यशपाल का झूठा–सच तथा अज्ञेय का 'अपने–अपने अजनबी' आदि अनेक ग्रन्थ विश्व साहित्य में सम्माननीय स्थान ग्रहण कर चुके हैं। विदेशी मूल के भी अनेक विद्वान हिन्दी में मौलिक सृजन कर रहे हैं। साथ ही भारतीय मूल के विदेशी भी हिन्दी साहित्य को समृद्ध बना रहें हैं। प्रवासी साहित्य आज जिस मुकाम पर है उसमें सूचना प्रौद्योगिकी की विशेष भूमिका है। प्रवासी साहित्यकारों में मॉरिशस से अभिमन्यु अनंत, न्युयॉर्क से कृष्ण बलदेव वैद, तेजेन्द्र शर्मा आदि प्रमुख है।

आमतौर पर यह धारणा है कि कम्प्यूटर या इंटरनेट की बुनियादी भाषा अंग्रेजी है परन्तु यह गलत है क्योंकि कम्प्यूटर की भाषा अंकों की भाषा है। यदि सूचना प्रौद्योगिकी की भारतीय में सन्दर्भ बात की जाए तो इसे हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के अनुरूप ढलना ही होगा। तभी इसका अधिकतम उपयोग हो सकेगा। अधिकतर दिग्गज आई.टी. कम्पनियां चाहे याहू, गूगल, ओरेकल, माईक्रोसॉफ्ट सभी ने हिन्दी को अपनाना शुरू कर दिया है। आज इंटरनेट एक्सप्लोरर, मोजिला, क्रोम आदि इंटरनेट ब्राउजर भी खुलकर हिन्दी का समर्थन कर रहे है।

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी के प्रयोग करने वाली इतनी बड़ी जनसंख्या को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि देश में प्रौद्योगिकीय साधनों एवम् सॉफ्टवयरों आदि को विकसित करना अधिक महत्वपूर्ण है ताकि जनसंख्या के एक बड़े भाग के द्वारा इनका प्रयोग किया जा सके। वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी सहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे अभूतपूर्व विकास वास्तव में किसी भी देश समाज के विकास के मानदण्ड बन गए हैं। किसी देश के विकास का आकलन वहाँ के विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास से किया जाता हैं क्योंकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के बिना देश का विकास सम्भव नहीं है। भारत के सन्दर्भ में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की बात की जाए तो दो–तीन दशक पूर्व ही भारत में कम्प्यूटर रूपी सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग में तीव्रता आई है और आज कम्प्यूटर आमजन की पहुँच के भीतर है। किन्तु सूचना प्रौद्योगिकी को गांव–गांव तक पहुंचाने और वहाँ के लोगों द्वारा इसे इस्तेमाल में लाने के लिए मुझे अपनी भाषा के साथ जोड़ना जरूरी

है। यह जुड़ाव की भाषा हिन्दी के अतिरिक्त कोई ओर नहीं हो सकती क्योंकि हिन्दी भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर व्यवहार में आने वाली भाषा है और न केवल भारत में अपितु विश्व में भी कमोबेश यह मंदारिन अंग्रेजी के समकक्ष है। अन्य भाषाओं के ज्ञान को स्थानीय भाषा में उतारने में अनुवाद सहायक सिद्ध होता है। वैश्विक पटल पर घटित घटनाओं, आधुनिक जानकारियों, नए आविष्कारों तथा चिकित्सा और तकनिकी क्षेत्र में हो रहे विकास को लोगों तक पहुंचाने में अनुवाद ही प्रमुख सहारा है।

ज्ञान के सभी आयाम को जानने के लिए, उससे सम्बन्धित जानकारी हिन्दी बेवसाईट पर उपलब्ध होती है। यूनीकोड़ के कारण कम्प्यूटर पर अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं में कार्य करना बहुत ही आसान हो गया है। यूनीकोड़ के कारण भारतीय बाजार के साथ–साथ ही विश्व बाजार में भी हन्दी का जबरदस्त विस्तार हुआ है।

भूमंडलीकरण के आज के युग में सभी क्षेत्रों में निजीकरण का जो प्रभुत्व बढ़ता जा रहा है, उसमें प्रौद्योगिकी को सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली भाषा के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने की आधार–दृष्टि रही है। विश्व–व्यापार को बढ़ावा देने में कम्प्यूटर सहित सूचना प्रौद्योगिकी के समस्त साधन–उपकरणों की विशिष्ट भूमिका हैं। वाणिज्य–व्यापार से जुड़ी प्रौद्योगिकी को उपभोक्ता वर्ग की भाषा से जोड़ा जाए। यही कारण है कि आज वाणिज्य–व्यापार के क्षेत्र में आर्थिक लाभ की दृष्टि से बहुराष्ट्रीय कंपनियां देश–स्थान विशेष की भाषायी शक्ति की पहचान रही हैं। विश्व मं सबसे अधिक लोगो द्वारा बोली–समझी जाने वाली दूसरी भाषा और मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाले तैंतीस करोड़ लोगों की भाषा के संबंध में बहुराष्ट्रीय कंपनियां इस तथ्य से भली भांति अवगत हैं कि भारत जैसे विशाल बाजार की सम्भावनाओं वाले देश में अपने उत्पाद को जनमानस तक पहुंचाने, अपने उत्पादों की बिक्री बढ़ाते हुए ज्यादा से ज्यादा माल खपाने एवम् बाजार पर अपनी पकड़ को मजबूत करने का कार्य हिन्दी भाषा को नजरअंदाज करके नहीं किया जा सकता। बाजार में अपनी पैठ बनाकर अपने उत्पाद को बेचना आज लगभग सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का लक्ष्य है। हालाँकि यह सही है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों में अभी भी अंग्रेजी का प्रभुत्व है, किंतु यह भी सही है कि उन्हें अपने उत्पादां को जन–सामान्य तक पहुंचाने के लिए आम उपभोक्ता की सोच और आवश्यकताओं को पहचानने के लिए हिन्दी का सहारा लेने की जरूरत पड़ रही है। यही कारण है कि स्वयं को भारतीय बाजार में स्थापित करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारतीय उपभोक्ताओं से हिन्दी भाषा के माध्यम से सम्पर्क स्थापित करने के लिए विभिन्न जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रचार–प्रसार का मार्ग अपनाती है।

अतः सूचना प्रौद्योगिकी के साथ ही हमारे जनसंख्या बल ने हिन्दी भाषा को विश्व के मानचित्र पर अंकित कर दिया है। यह भी एक सत्य है कि किसी भी भाषा का विकास और प्राचार स्वतः विकास की राह पर आगे बढ़ता है। आज प्रिंट, इलैक्टॉनिक मिडिया, फिल्म, सिरियल, डिस्कवरी, हिस्ट्री तथा कॉर्टून आदि सभी का हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है जिससे हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की झलक दिखाई देती है। हिन्दी के भविष्य को अधिक उज्ज्वल बनाने के लिए आवश्यक है कि हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त तकनीक, विज्ञान, वाणिज्य आदि विषयों पर वेबसाईट तैयार करने की। उपयोगी अंग्रेजी साईटस को

हिन्दी में तैयार करने की साथ ही भाषा को वर्तमान सन्दर्भ के अनुसार लचीला रूख भी अपनाना होगा तथा साथ ही इसके प्रति संवेदनशील बनें।

सन्दर्भ –

1. हिन्दी की दशा और दिशा, डॉ. सुधेश, मैट्रो बुक्स, नई दिल्ली, 2013
2. अनुवाद : अवधारणा और आयाम, डॉ. सुरेश सिंहल, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
3. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, राकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
4. कम्प्यूटर और सूचना तकनीक, शंकर सिंह, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली, 2012
5. सूचना एवं दूरसंचार प्रौद्योगिकी, डॉ. सी. एल. गर्ग, पूनम पुस्तक सदन, दिल्ली, 2011
6. सूचना प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, शंकर सिंह, साइबर टेक पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2002